साक्षात्कार

गुरु की परछाई से भी बहुत सीखा जा सकता है – प्रो. पूर्णिमा पांडे

कथक नृत्य के क्षेत्र में प्रो. पूर्णिमा पाण्डे का नाम किसी परिचय का मोहताज़ नही है. आपका जीवन एक कलाकार के जीवन संघर्ष और उसकी संगीत साधना की कहानी कहता है. एक कलाकार, एक गुरु और एक प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर आपने अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया और संगीत के क्षेत्र में बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की.

पूर्णिमा जी कनाडा, यू.एस.ए. जर्मनी, फ्रांस, मारीशस आदि देशों में नृत्य के माध्यम से भारत का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर चुकी है. देश–विदेश में कथक नृत्य की सफल मंचीय प्रस्तुतियां दी है. आपने मेघदूत, बारहमासा, गौतम बुद्ध, सलीम का ख़्वाब, कुमार हरण, सुमित्रानंदन पन्त की 'ज्योत्सना', ईस्ट मीट वेस्ट, उर्वशी आदि नृत्य नाटिकाओं की कोरियोग्राफी भी की. आपने 1991 में कथक नृत्य में दिए जाने वाले संगीत का संग्रह 'नृत्यांजलि' के नाम से चार भागों में कैसेट्स के रूप में प्रकाशित किया, जो कथक सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ. इसका विमोचन स्वयं पं. बिरजू महाराज ने किया था.

Purnima Pande

दूरदर्शन से 'ए' ग्रेड की नियमित कलाकार रही पूर्णिमा जी को संगीत नृत्य में अपने अतुलनीय योगदान के लिए बहुत सारे पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है. जिसमें 'नृत्य शिरोमणि', उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, American Biography Institute, USA द्वारा 'Universal Award for Significant contribution to Society', National and International Compendium, New Delhi द्वारा Life Time Achievement Award प्रमुख है.

आप भातखंडे संगीत संस्थान विश्वविद्यालय, लखनऊ (वर्ष 2001- 2004) तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (वर्ष 2004 - 2007) की कुलपति रह चुकी है. पूर्णिमा जी वर्ष 2000 से 2012 तक उत्तराखण्ड सरकार के संस्कृति विभाग की एडवाइजर रह चुकी है. इसके अलावा आप दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश आदि प्रदेशों के विभिन्न सांस्कृतिक एवं सांगीतिक कमेटियों की सदस्य रह चुकी है. वर्तमान में आप उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ में अध्यक्ष पर अपनी सेवाएँ दे रही है.

- *नमस्कार पूर्णिमा जी, सबसे पहले आप अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में बताए. आपका संगीत के क्षेत्र में कैसे आना हुआ?*

मेरा जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले में हुआ. मेरी प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में हुई. मेरे घर में पढाई लिखाई का एक अच्छा वातावरण था. हमारे घर में एक परंपरा थी कि शाम को भगवान् के मंदिर में दीपक जलता था और घर के लोग आपस में बैठकर कुछ भजन- कीर्तन करते थे, इस तरह संगीत का परिवेश मुझे मेरे घर से ही मिला. आगे की पढाई के लिए मैं लखनऊ आ गयी. यहाँ मेरे बड़े भाई रहते थे. मेरे बड़े भाई मेरे पिता तुल्य थे. उन्हें भी संगीत से प्रेम था. शायद उन्होंने मेरे अन्दर संगीत के प्रति अनुराग देखा होगा, जिसके कारण उन्होंने मेरा दाखिला 1954-55 के करीब मैरिस म्यूजिक कालेज, जोकि आज भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता है, में करा दिया था. शुरुआत में मैंने गायन में दाखिला लिया था लेकिन मुझे नृत्य बहुत पसंद था. कथक नृत्य की कक्षाओं के बाहर मैं अक्सर खड़े होकर नृत्य करती लड़कियों को देखा करती थी. फिर मैंने कथक नृत्य में एडमिशन ले लिया. मैंने पूरन चन्द्र पांडे जी से सबसे पहले कथक की तत्कार सीखी थी. वो मैरिस कालेज में गुरु नही थे लेकिन कभी कभी वो क्लास लेने आते थे. उसके बाद प्रथमा और मध्यमा की कक्षाओं तक श्रीमती उमा गुप्ता जी के पास कथक सीखा, वो वहाँ की नियमित गुरु थी. उसके बाद आगे की शिक्षा मैंने गुरु विक्रम सिंह जी और गुरु मोहनराव कल्याणपुरकर जी से ली.

विक्रम सिंह जी कथक के लखनऊ घराने के थे और मोहनराव कल्याणपुरकर जी लखनऊ और जयपुर दोनों घराने के गुरु थे. जयपुर की उनकी शिक्षा गुरु सुन्दर प्रसाद जी से हुई थी और लखनऊ आकर उन्होंने गुरु अच्छन महाराज से तालीम ली थी. यह मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे दोनों घरानों के गुरुओं से सीखने को मिला, जो अपने अपने हुनर में माहिर थे. दोनों घरानों की बंदिशों को और उनकी शैलियों को एक ही समय में सीखने का मौका मिला जिससे मुझे दोनों घरानों के अंतर और दोनों की विशेषताओं को एक साथ समझने का अवसर मिला. इन्हीं दोनों के निर्देशन में मुझे कार्यक्रम करने का भी अवसर मिला.

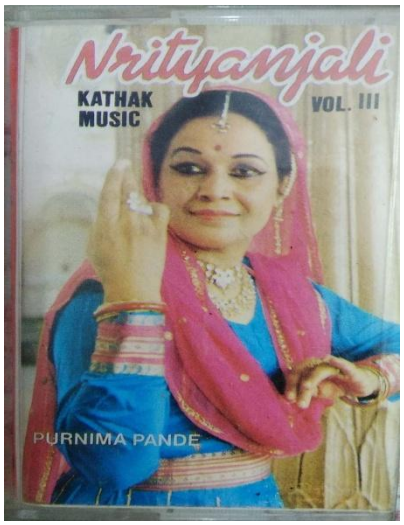

इन दोनों गुरुओं के अलावा मुझे पं बिरजू महाराज से भी तालीम लेने का अवसर प्राप्त हुआ. पं बिरजू महाराज जोकि उन दिनों दिल्ली कथक केंद्र में सिखा रहे थे. उनकी माता जी यहीं रहती थी इसलिए वो बीच बीच में लखनऊ आते रहते थे. लेकिन गर्मी की छुट्टियों में डेढ़ – दो महीने के लिए वो यहीं लखनऊ आ जाते थे. उस समय अक्सर बिरजू महाराज जी के साथ विक्रम सिंह जी और कल्याणपुरकर जी मुलाकातें, महफिलें होती रहती थी. कभी वो मैरिस कालेज आ जाते थे तो कभी मैं अपने गुरुओं के साथ उनके पास सीखने चली जाती थी. मैरिस कालेज के सामने एक वीणा हॉल हुआ करता था. कल्याणपुरकर जी वही रहते थे. जब बिरजू महाराज आते थे तो हमारी सुबह का रियाज़ उसी वीणा हॉल में होता था.

- *जैसा कि आपने बताया कि आपकी तालीम कथक के इतने बड़े गुरुओं से हुई. उनके तालीम के देने के तरीके कैसे होते थे? पहले नृत्य सिखाने के तरीकों और आज के तरीकों में क्या अंतर आया है? इस बदलाव को आप किस नज़रिए से देखतीं है.*

संस्थागत शिक्षा में पहले की तालीम और आज की तालीम के तरीकों में बहुत अंतर आ गया है. आजकल बच्चा जब सीखने आता है तो साल दो साल में सीख कर जल्दी से जल्दी मंच का कलाकार बन जाना चाहता है. मजे की बात यह है कि उसके माता-पिता भी यहीं चाहते है. इस जल्दबाजी के चक्कर में वो कथक की मूल बातों से वंचित रह जाता है. उसकी प्रारम्भिक स्तर की तालीम में जो मजबूती और परिपक्वता आनी चाहिए, वो नही आ पाती. हमारे ज़माने में छह महीने की प्रवेशिका की कक्षा होती थी. वो कक्षा नहीं एक तरह की परीक्षा होती थी, जिसमे यह देखा जाता था कि बच्चा नृत्य सीखने लायक है कि नहीं. छह महीने में दो महीने सिर्फ तत्कार साधने में ही निकल जाते थे. फिर तत्कार के पल्टे, गिनती की तिहाई, तत्कार के हस्तक आदि सिखाया जाता था. उसके बाद की कक्षाओं में टुकड़े सिखाए जाते थे. परन और थाट का नम्बर तो बहुत बाद में आता था, जोकि आज सबसे पहले सिखा दिया जाता है. करीब साढ़े पांच वर्ष के बाद मतलब विशारद के बाद अभिनय का नम्बर आता था. तब तक विद्यार्थी भी नृत्य के प्रति संवेदनशील हो जाता था और भाव की अनुभूति करने लगता था. एक और ख़ास बात जो उनकी तालीम में थी कि शुरुआत में सब तालीम – तिहाई, टुकड़ा वगैरह याद करा दिया जाता था लेकिन तृतीय या चतुर्थ वर्ष के बाद रटा-रटाया नहीं सिखाया जाता था. गुरु जी एक बोल दे देते थे जैसे – तेटेकत गदिगन धाती धा...और कहते थे कि हर मात्रा से उठकर तिहाई बनाकर लाओ या किसी ताल का टुकड़ा दूसरी ताल में चक्करदार बनकर कैसे आएगा....आदि. तो इस तरह से हमारी तालीम में शारीरिक अभ्यास के साथ मानसिक अभ्यास भी कराते थे. इस प्रकार से बंदिशों से लेकर लय, लयकारी, ताल सभी पर एक मजबूत पकड़ आ जाती थी.

- *विद्यार्थी जीवन की कोई दिलचस्प घटना जो आप हमारे साथ साझा करना चाहें .*

लखनऊ में उस समय गाने–बजाने का ऐसा दौर था कि कलाकार बहुत खुले दिल से एक दुसरे से मिलते थे और अपने ज्ञान को साझा करते थे. हमारे गुरु जी के पास अक्सर उस समय के बड़े बड़े कलाकार - शंभू महाराज, बिरजू महाराज, गुदई महाराज, किशन महाराज, आते रहते थे. इनमे घंटो संगीत की चर्चा होती रहती थी. एक से एक बेहतरीन बंदिशें एक दूसरे को सुनाते थे. उस्ताद अहमदजान थिरकुवा और हमारे गुरु जी में बड़ी गहरी दोस्ती थी. अक्सर वो हमारे क्लास में आते थे और एक से एक सुन्दर बंदिशें सुनाते थे. इसे मैं अपना सौभाग्य ही कहूंगी कि मुझे अपने समय के उन महान कलाकारों की सोहबत मिली. उनको सुन सुन कर बहुत सी बंदिशें मैंने याद कर ली थी. जैसे थिरकवा साहब ने एक बंदिश पढ़ी थी, जिसे मैंने सुनकर याद कर लिया था –

नागिन धेतSता धेत	तागिन्नधा S	त्रकधेतधेतधेत	धड़Sन्न किटतक
धागेनकतS	SS	धागेनकतS	SS
तकिटता किटतक	धागेनकततिS	तड़Sन्न धा S	ता धा किटतक
धागेनकतS	S धागेन	कतSधा	गेनकतS

- *आज का समाज पहले की तुलना में काफी खुला है. मंचों पर लड़कियों के नृत्य प्रदर्शन को काफी हद तक सामाजिक स्वीकृति मिल चुकी है. लेकिन जब आप ने मंच प्रदर्शन शुरू किया था तब का सामाजिक परिवेश इतना खुला हुआ नहीं था...ऐसी स्तिथि में आपको अपने मुकाम तक पहुंचने में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा? परिवार और समाज का क्या रुख था?*

आप सही कह रहे है. समाज में बदलाव हमेशा होता ही रहता है. पहले की सामाजिक स्तिथियों और आज की सामाजिक स्तिथियों में काफी बदलाव भी आ चुका है. कथक नृत्य की बात करें तो शुरूआती दौर में कथक नृत्य को समाज ने बहुत प्रोत्साहन नहीं दिया इसकी सामाजिक अस्वीकृति के पीछे एक बहुत बड़ा कारण उसका कोठों और तवायफों से जुड़ा होना था. सिनेमा ने भी इसको फायदा कम नुक्सान ज्यादा पहुचाया. सिनेमा में जब भी कथक नृत्य को दिखाया गया उसे कोठों पर या कोठों से जुड़ा हुआ ही दिखाया गया. जिस कारण मुझे लगता है कि आज भी समाज का एक वर्ग ऐसा है जो कथक नृत्य को कोठों से ही जोड़कर देखता है. उनकी मानसिकता में वैसा बदलाव नही आ पाया है जैसा अपेक्षित था. जबकि यह कला इतनी पवित्र और पावन है कि योगियों को कठिन से कठिन साधना से जो वर्षों में प्राप्त होता है उसे कलाकार अपनी संगीत साधना से आसानी से प्राप्त कर लेता है. इस कला के वास्तविक मूल्यों को समाज के सामान्य वर्ग के लोग इतनी गंभीरता से नहीं समझ पाए जितना कि उनसे अपेक्षा थी.

उस समय लड़कियां मैरिस म्यूजिक कालेज में नृत्य सीख तो रही थी, लेकिन सभी को मंचों पर नृत्य प्रदर्शन की इज़ाजत घर से नही मिल पाती थी. जब मैनें हाई स्कूल कर लिया तो कुछ रिश्तेदारों ने घर वालों कहना शुरू कर दिया अब लड़की बड़ी हो गई है. अब नाचना-गाना बंद करवा दो. लेकिन मेरे घर वालों ने कुछ ख़ास प्रतिक्रिया नही दी. बाद में वो कहने लगे कि जब डांसर ही बनाना है तो पढ़ा लिखा क्यों रहे हो. इस मामले में मेरा परिवार बहुत प्रगतिशील विचारों का था. उसने मुझे कथक नृत्य सीखने के लिए भेजा और मेरे मनोबल को कहीं से भी कमजोर नही होने दिया. कुछ पारिवारिक परिस्थितियों के चलते मुझे बीच में कथक छोड़ना भी पड़ा लेकिन बाद में फिर से मैंने शुरुआत की और गुरु कृपा से मुझे नेशनल स्कालरशिप भी मिली.

एक कलाकार का जीवन उसकी संगीत साधना और उसके जीवन संघर्ष की गाथा होती है. साधना और संघर्ष कलाकार को परिपक्व बनाते है. जैसा की सब जानते है कि संगीत एक महंगी विद्या है. रियाज़ करने के लिए नियमित संगतकर्ता चाहिए और संगतकर्ता को फीस चाहिए. तो मैंने इंटरमीडिएट के बाद पार्टटाइम जॉब शुरू कर दी थी. सन 1962-63 के करीब सबसे पहले मैंने हजरतगंज के कैथड्रिल स्कूल में एक साल नृत्य सिखाया. बी.ए. के बाद मैंने बी.एड. किया. उसके बाद मैंने लखनऊ क्राइस्ट चर्च स्कूल में पढ़ाया. कैसरबाग स्थित नारी शिक्षा

निकेतन में भी मैंने अध्यापन किया. सुबह मैं स्कूल में पढ़ाती थी. दोपहर में लखनऊ विश्विद्यालय में क्लास करती थी और शाम को मैरिस कालेज में कथक सीखती थी. इस तरह पढ़ना, पढ़ाना और रियाज़ सब साथ साथ चलता था.

- *एक कथक गुरु के रूप में आपका क्या अनुभव रहा है? कौन-कौन से विद्यार्थी आपने तैयार की हैं जो आज कथक नृत्य को आगे बढ़ा रहे हैं?*

एक विद्यार्थी अपने गुरु से सीखकर जब कला का अच्छा प्रदर्शन करता है और उसका नाम होता है तो सबसे ज्यादा आत्मीय सुख उसके गुरु को मिलता है. गुरुमुखी विद्या होने के कारण गुरु के सानिद्ध्य से ही विद्यार्थी बहुत सीख लेता है. नृत्य सिखाते सिखाते भाव के स्तर पर बच्चों से इस प्रकार जुड़ाव हो जाता है कि महसूस ही नहीं होता कि ये हमारे बच्चे नही है. एक विश्वास का रिश्ता बन जाता है और यह रिश्ता ही सच्चे अर्थों में जीवन है. 35 वर्षों के दीर्घ शिक्षण काल में बहुत सारे विद्यार्थी तैयार होकर निकले जो कथक नृत्य के क्षेत्र में काम कर रहे है. इनकी फेहरिस्त बहुत लम्बी है. फिर भी कुछ प्रमुख शिष्याओं में पूनम पाण्डेय, नीति नारोला, डॉ. रूचि खरे, डॉ. विधि नागर, आकांक्षा शुक्ला आदि है. इसके अलावा जर्मनी में हेलेन, एलिन ब्रिताय; जापान में निहोको, मिचिको सातों सूरेनाम में प्रकाश माखन, सुनयना; इसके अतिरिक्त मोंट्रियल, गयाना, श्रीलंका आदि देशों में भी कई सारे शिष्य-शिष्याएं है जो अपने अपने स्तर पर कथक नृत्य में काम कर रहे है.

- *आपने अपने देश के अलावा विदेशों में भी कथक नृत्य की सफल मंच की प्रस्तुतियां दी है यहां के दर्शक और वहां के दर्शकों में क्या अंतर है?*

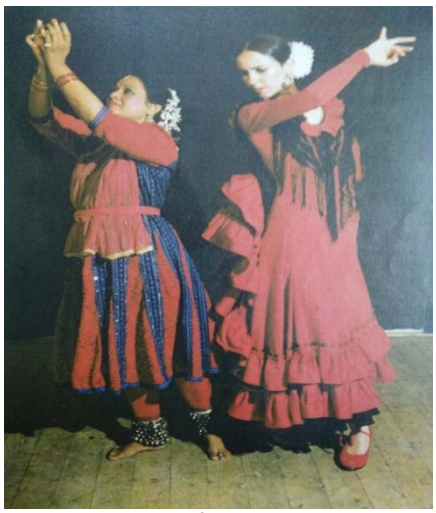

यहाँ नृत्य करना और बाहर विदेश में नृत्य प्रदर्शन करने में काफी अंतर है. हमारे यहाँ कथक नृत्य विलंबित से शुरू होता है फिर थाट, टुकड़े, परन से होता हुआ गत पर ख़त्म होता है. इस पूरे प्रदर्शन में कम से कम एक से डेढ़ घंटा निकल जाता है. यहाँ के दर्शक आराम से एक- डेढ़ घंटे का कार्यक्रम देख लेते है लेकिन विदेश में दर्शक को छोटा और क्रिस्पी आइटम चाहिए होता है. मेरा सौभाग्य रहा कि इस मामले में मुझे पं. बिरजू महाराज का अनुभव और सानिद्ध्य प्राप्त हुआ. उनकी मदद से मैंने वहाँ की ऑडियंस की पसंद के हिसाब से कुछ अच्छे आइटम तैयार किये थे, जिन्हें वहाँ की ऑडियंस ने बहुत पसंद किया. हमने वहाँ पर भारत के लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी. जिसको बहुत सराहना मिली. सत्तर के दशक तक पं. रवि शंकर, अल्ला रक्खा साहब, उस्ताद अली अकबर खान जैसे कलाकारों ने भारतीय संगीत का इतना प्रचार- प्रसार कर दिया था या यूं कहे कि भारतीय संगीत की एक मजबूत पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी कि उसका लाभ बाद में जाने वाले कलाकारों को खूब मिला. मोंट्रियल के पास वैलमोर नाम कि जगह थी वहाँ योग का आश्रम था. उसमे पं. रवि शंकर और अल्ला रक्खा साहब का प्रोग्राम था. उसी में मेरी भी कथक की प्रस्तुति थी. रवि शंकर जी के साथ मंच साझा करना मेरे लिए भगवान् का सबसे बड़ा आशीर्वाद था.

यहाँ की ऑडियंस और वहाँ की ऑडियंस में एक बड़ा अंतर अनुशासन का है. वहाँ लोग धैर्यपूर्वक पूरा कार्यक्रम देखते है. बीच में उठना या कुछ खाते-पीते रहना उनकी आदतों में नहीं होता है. वो मानसिक रूप से तैयार होकर आते है कि हम कार्यक्रम देखने या सुनाने जा रहे है. कार्यक्रम के बाद वो अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए सवाल भी पूछते है और खुले दिल से सराहना भी करते है.

- *आप भातखंडे संगीत संस्थान और खैरागढ़ विश्वविद्यालय दोनों की कुलपति रह चुकी हैं. अभी आप संगीत नाटक एकेडमी की अध्यक्ष हैं. इसके अलावा भी कई प्रशासनिक पदों पर कार्य कर चुकी हैं. इस संबंध में क्या अनुभव है आपका? एक कलाकार, एक गुरु और एक प्रशासनिक अधिकारी की भूमिका में कौन ज्यादा कठिन है.*

चुनौतियां तो सब जगह होती है. चाहे आप कलाकार के तौर पर देखे या एक गुरु के तौर पर या एक प्रशासक के रूप में. शुरुआत में सब कठिन लगा लेकिन जैसे जैसे काम करती गयी, चीज़े समझ में आती गई. मुझे लगता है मैंने धैर्यपूर्वक हर चुनौती का सामना किया और मुझे सफलता मिलती गई. लगातार सीखने के जज़्बे ने मुझे आगे बढ़ाया. अपने पद की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए और सबको उचित सम्मान देते हुए पूरी निष्ठा के साथ मैंने अपने काम को किया है. इसके साथ ही एक बात जोड़ना चाहती हूँ अनुशासन का आपके जीवन में बड़ा महत्व होता है. जिसे मैंने अपने परिवार और अपने गुरुओं से सीखा. मेरे गुरुओं ने केवल नृत्य की ही शिक्षा नही दी. जीवन को कैसे सकारात्मक नज़रिए से जिए यह भी सिखाया. व्यक्तिगत तौर पर मेरा मानना है कि योग्य गुरु की परछाई से भी सीखा जा सकता है. यह उन्हीं का आशीर्वाद है कि आज मैं इस मुक़ाम पर हूँ और कथक और संगीत समाज के लिए काम कर पा रही हूँ.

- *आज विभिन्न टीवी चैनलों पर आने वाले डांस के रियलिटी शो को आप किस दृष्टि से देखती है? क्या शास्त्रीय नृत्यों के रियल्टी शो नहीं होने चाहिए जिससे नई पीढ़ी को अच्छा मंच मिल सके.*

आज का समाज बड़ा साधन संपन्न हो गया है. कोई भी बच्चा अपनी रूचि के अनुसार कोई भी नृत्य सीखने के लिये चुन सकता है. वो बॉलीवुड का डांस हो या शास्त्रीय नृत्य विधा. हर नृत्य पसंद करने वाले का रुझान शास्त्रीय नृत्य शालियों की ओर हो, यह संभव नहीं हो सकता. फिर class और mass का क्या अंतर रह जाएगा. कथक, भरतनाट्यम, मणिपुरी.....ये सब classical dance forms है जबकि बॉलीवुड का डांस mass के लिए है. भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों को सीखने के लिए बहुत धैर्य, लम्बी अनवरत साधना, गुरु का सानिध्य ये सब बहुत जरूरी है. मेरे कहने का मतलब यह बिलकुल भी नहीं है कि बॉलीवुड का डांस आसान है या उसमे मेहनत नही है. इसमें बात रूचि की है. उसका अपना महत्व है. जो बच्चे रियलिटी शो में प्रदर्शन कर रहे है वो भी बहुत अच्छा काम कर रहे है. संख्या के आधार पर नही देखना चाहिए कि कथक लोग कम सीख रहे और बॉलीवुड का डांस अधिक कर रहे है. शास्त्रीय नृत्य सीखने वालों की संख्या बॉलीवुड का डांस

करने वालों से हमेशा कम रहेगी. और कम होनी भी चाहिए क्योंकि क्वांटिटी अधिक बढ़ जाएगी तो इसका बुरा असर क्वालिटी पर पड़ेगा. आज की तारीख़ में कथक सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या में काफी बढ़ी है और ये इसके उज्जवल भविष्य का संकेत भी है.

- *प्रसिद्ध नृत्यांगना सोनल मानसिंह जी राज्यसभा के मनोनीत सदस्य हैं वह ऐसे मुकाम पर हैं जहां से संगीत के लिए वह काफी कुछ कर सकती हैं. आपकी उनसे क्या अपेक्षाएं हैं इस संबंध में?*

सोनलमान सिंह जी बहुत परिपक्व कलाकार है साथ ही एक विदूषी और प्रबुद्ध महिला भी है. उनकी सोच बहुत विस्तृत है. कला संगीत जगत की समस्याओं को वो बहुत अच्छे समझती है. व्यक्तिगत तौर पर मैं जानती हूँ कि वो कला और कलाकार को लेकर काफी सकारात्मक है. सामान्यतः वो समझौता करने वालों में से नही है. आप उनसे अपेक्षा की बात कर रहे है पर मुझको लगता है कि वो संगीत नृत्य के लिए कुछ न कुछ जरूर कर रही होंगी, जिससे संगीत समाज को लाभ होगा.

अपने अनुभवों और विचारों को हमारे साथ साझा करने के लिए और अपना कीमती समय देने के लिए संगीत गैलेक्सी पत्रिका की ओर से आपको धन्यवाद.

डॉ. अमित वर्मा
सम्पादक, संगीत गैलेक्सी